

विलुप्तपूर्वः *MRĀH. 6, 18.* तस्कारविलुप्तवित्तः *VARĀH. BRH. S. 3, 14.* क्र-
व्याङ्गलतिका नियतं विलुप्ता *UTTARAR. ed. Cow. 72, 12* (प्रलुप्ता die
ältere Ausg.). *plündern*: पुरीम् *BHĀG. P. 4, 27, 14.* सार्धम् *5, 13, 2, 26, 27.*
7, 7, 6. राष्ट्रं सुरन्तितं तात शत्रुभिर्न विलुप्यते *MBH. 2, 161.* *VARĀH. BRH. S.*
71, 8. — 3) *zerstören, zu Grunde richten, zu Nichte machen*: यो रत्नि-
भ्यः संप्रदाय राजा राष्ट्रं विलुप्यति *MBH. 13, 3084.* यज्ञवाटं विलुलुपुः *HARIV. 8010.* पशुपत्निमनुष्याद्यैः पन्नपुष्पफलान्वितम् । वृत्तं विलुप्यमानं दृष्ट्वा
MĀRK. P. 43, 53. संरत्तामि विलुप्यामि *MBH. 12, 8130, 14, 2699.* विलुप्य-
न्विसृजन्गृह्णन् *BHĀG. P. 2, 9, 26.* *NAISH. 22, 54.* कामक्रोधा शरीरस्थौ प्र-
ज्ञानं तौ विलुप्यतः *Spr. 3999. 2872.* सतो मार्गान् *MBH. 12, 5895.* विलु-
प्य शासनान्यन्यानि *ÇATR. 14, 282. 191.* तस्य यज्ञो हि रत्नोभिस्तदा वि-
लुलुपे किल *R. 1, 20, 3* (21, 2 *GORR.*). *med. und pass. zerfallen, zu Grunde gehen, zu Nichte werden, verschwinden, fehlen, nicht da sein*: विलुप्यतामघम्
KAUC. 83. माहं प्राणानां वसूनां मध्ये यज्ञो विलोप्यसीय *ĀHĀND. Up. 3, 16, 2.*
वि तथा हृन्दासि लुप्येरन् *AIT. Br. 6, 2.* स्मृतिर्मम विलुप्यते *R. 2, 64, 63.*
वदनं कात्तमार्ताया वैदेह्या न विलुप्यते *R. GORR. 2, 60, 15.* कपित्थे च ना-
स्य प्रज्ञा विलुप्यते *KATHĀS. 37, 111. 68, 45.* धर्मो वि° *MĀRK. P. 77, 18.*
WEBER, Nax. 2, 286. विलुप्त *zu Grunde gegangen u. s. w.* *MBH. 1, 6251.*
RAGH. 9, 82. 15, 2. 16, 59. 19, 32. *KUMĀRAS. 4, 2.* *GAUNARDA bei MALLIN. zu*
KUMĀRAS. 7, 95. *KATHĀS. 90, 175. 101, 387. 106, 146.* *SĀH. D. 306, 1.* अवि-
लुप्त *KATHĀS. 65, 35.* *RĀĠĀ-TAR. 5, 5.* *BHĀG. P. 3, 7, 5.* — Vgl. विलोप *fgg.*
— *caus. es fehlen lassen an (acc.), vorenthalten, entziehen*: काले स्थाने
च पात्रे च नहि वृत्तिं विलोपयेत् (राजा) *KĀM. NĪTIS. 5, 65.* *verschwinden*
—, *zu Nichte machen, unterdrücken*: तेन (वातेन) तत्र प्रदीपः स दीप्य-
मानो विलोपितः *so v. a. ausgelöscht MBH. 1, 5233.* न च धर्मं विलोपये
12, 5627. धर्मार्थे च विलोपिते *1, 7752.*

— *प्रवि, partic. °लुप्त verschwinden, entfernt, zu Nichte geworden*
KUMĀRAS. 5, 8. *KATHĀS. 103, 206.* — *caus. aufgeben, fahren lassen*: प्रा-
क्कर्म प्रविलोप्यतो चित्तबलान्नाप्युत्तरे श्लिष्यताम् *Spr. 3836.*

— *सम् zupfen, zerren; wegreißen*: सर्वाः संलुप्येतः कृत्याः पुनः कुत्रे
प्र हिणमसि *AV. 10, 1, 30.* *KĀTH. 21, 7.* योनिमनुष्यामृशं संलुप्याच्छिन्नत्
ÇAT. Br. 5, 5, 5, 6. — *caus. zerstören, zu Grunde richten*: समलुलुपन्
MBH. 8, 1423.

2. लुप् (= 1. लुप्) *Abfall, Ausfall, Schwund* (eines Lautes u. s. w.) *P.*
1, 1, 61. 2, 51. 4, 2, 4. 3, 166. 5, 2, 105. 3, 98. AK. 3, 6, 6, 41. ÇĀNT. 2, 16.
VOP. 1, 13, 2, 16. 49, 3, 41. 116. 165. so v. a. लुप्त abgefallen VS. PRĀT. 1, 114.

लुप्तविस्मृता *f. das Fehlen des Visarga SĀH. D. 575.*

लुप्तोपम *adj. wobei das tertium comparationis fehlt Nir. 3, 18. ÇĀMĀ.*
zu ĀHĀND. Up. S. 61.

लुप्तोपमा *f. ein unvollständiges —, elliptisches Gleichniss PRATĀPAR. 73,*
b, 5. KUVALAJ. 7, a; vgl. SĀH. D. 651. fgg.

लुब्ध 1) *adj. s. u. लुम्.* — 2) *m. Jäger H. an. 2, 247. MED. dh. 14.*
MBH. 16, 126. R. 2, 99, 2. P. 5, 4, 126 (AK. 2, 10, 24).

लुब्धक (von लुब्ध) *m. 1) Jäger AK. 2, 10, 21. H. 927. HAIĀJ. 2, 441.*
MBH. 1, 554. 3, 2395. 5, 1637. 16, 110. 126. KĀM. NĪTIS. 16, 7. Spr. 2234.
2998. KATHĀS. 8, 24. fg. 33, 112. RĀĠĀ-TAR. 5, 345. BHĀG. P. 4, 29, 53. 7,
2, 50. PAÑĀT. 104, 15. 106, 6. 7. HIT. 14, 12. — 2) der Stern Sirius (vgl.
मृगव्याध) GAṆITĀDH. BHAGRAHJ. 7. 8. COMM. zu SŪRJAS. 8, 10. fgg. Co-

LEBR. Misc. Ess. II, 332. 464. त्रिशङ्कुः किं न नीतो यो विश्यामित्रेण लु-
ब्धकः *KATHĀS. 28, 88. — 3) bildliche Bez. des Afters BHĀG. P. 4, 23, 53.*
29, 15. — Vgl. घ्रात्री°.

लुब्धता (von लुब्ध) *f. Habgier Spr. 3824.*

लुब्धत्व (wie oben) *n. dass. RĀĠĀ-TAR. 4, 628. heisses Verlangen nach:*
तत्सिद्धि° KATHĀS. 20, 106.

लुम्, लुम्भति (विमोहने) *DHĀTUP. 28, 22. लुम्भति (गार्ह्ये) 26, 128. 1) लु-*
भ्यति irre werden, in Unordnung gerathen: नास्य देवरयो लुभ्यति *AIT.*
Br. 2, 37. वायव्यमस्य लुब्धं शंसेदचं वा पर्दं वातीयातेनैव तद्भुब्धम् *3, 3.*
NIR. 4, 14. 6, 3. Nach P. 7, 2, 54 und Vop. 26, 102 lautet der absol. von
लुम् in der Bed. विमोहन लुभित्वा und लोभित्वा, das partic. लुभित. — 2)
लुभ्यति, लुलुभे; लोभिता und लोब्ध्या P. 7, 2, 48. Vop. 3, 79. 11, 5. लुभि-
त्वा, लोभित्वा und लुब्धा, लुब्ध P. 7, 2, 54. Vop. 26, 102. ein (heftiges)
Verlangen empfinden (aus der geordneten Ruhe kommen): स्मितशो-
भितेन मुखेन चेतो लुलुभे देवहृत्याः BHĀG. P. 3, 22, 21. die Ergänzung
im loc.: न लुभ्यति तृषोषपि MBH. 13, 3024. देवा अपि च लुभ्यन्ति त्व-
पि KATHĀS. 32, 96. 33, 160. पाण्डवार्थे हि लुभ्यतः sich interessirend
für die Sache der Pāṇḍava MBH. 5, 4389. im dat.: रामो लुलुभे मृ-
गाय Spr. 283. लुब्ध ein Verlangen empfindend; gierig, habgierig
AK. 3, 1, 22. H. 429. an. 2, 247. MED. dh. 14. HALĀJ. 2, 208. DAÇAK.
89, 5. M. 4, 87. 7, 30. BHĀG. 18, 27. R. 2, 66, 6. 73, 11. DAÇAR. 2, 8. Spr.
2017. 2674. fgg. 4628. 4956. fg. VARĀH. BRH. S. 101, 9. ऋ° M. 8, 63. 77.
R. 1, 6, 6. ऋति° PAÑĀT. I, 1 (HIT. II, 1). या लुब्धा धनकाङ्क्षया R. GORR.
2, 34, 10. ब्राह्मणत्वे लुब्धः MBH. 1, 3062. लुब्धो यशसि न त्वर्थे KATHĀS.
53, 30. मधु° R. 5, 62, 5. गन्धु° Spr. 820. धनु° 1291. 1937. VARĀH. BRH.
S. 101, 12. गुणालुब्धाः संपदः Spr. 3226. 3768. त्रुप° KATHĀS. 17, 138. 30,
15. RĀĠĀ-TAR. 4, 677. DAÇAK. 77, 1. 6. BHĀG. P. 4, 9, 12. 29, 53. HIT. 10, 2.
34, 18. VET. in LA. (III) 5, 7. बन्धु° so v. a. an den Verwandten hän-
gend R. 2, 113, 6. — 3) locken, an sich ziehen: नूनं स कालो मृगवेषधारी
नो लुलुभे *R. 5, 28, 10. — Vgl. ऋलुभ्यन्त् und लुब्ध.*

— *caus. लोभयति 1) in Unordnung bringen*: प्राणान् *ÇAT. Br. 4, 1, 1,*
8. — 2) Jmds Verlangen erregen, locken, anlocken, an sich ziehen: त्रु-
पयौवनमाधुर्यं चेष्टितास्मितभाषितैः । लोभयित्वा वरारोहि तपसस्तं निवर्तय ॥
MBH. 1, 2920. लोभयामास या चेतो मृगभूतस्य तस्य वै 3, 9997. R. 1, 8, 23
(24 GORR.). 9, 4, 64, 8. 63, 10. R. GORR. 1, 63, 16. लोभयिष्यति काकुत्स्थमटव्य-
श्चित्रकाननाः 2, 43, 15. 3, 13, 15. 49, 86. 50, 6. नाहं लोभयितुं शक्या ष्टेष्ट-
र्येषा धनेन वा 5, 23, 12. KATHĀS. 11, 24. 43, 90. 72, 228. PAÑĀT. 256, 1.
BHĀT. 5, 48. लोभयमाननयनः श्लाघाप्रकैर्मखलागुणपदैर्नितम्बिभिः (योषि-
ताम्) RAGH. 19, 26. सुखलेशेन लोभितः Spr. 3984. BHĀG. P. 10, 15, 26.
med.: यन्मो लोभयसे रम्भे R. 1, 64, 12 (66, 15 GORR.). लोभयान HARIV.
3740. लोभितवती MBH. 1, 4884.

— *intens. ein heftiges Verlangen haben nach (loc.): लोलुभ्यमानास्ते*
र्षेषु KĀM. NĪTIS. 7, 1.

— *घनु caus. ein Verlangen haben nach*: पश्यन्नत्वाकुलं चित्रं नरः को
नानुलोभयेत् *R. 3, 49, 38.*

— *अभि caus. anlocken*: बल्लवलाकुर्वता गोपमभिलोभयतेव, वज्रमभिलो-
भयति *PAÑĀT. Br. 7, 7, 11.*

— *घव s. घनवलोभन.*